International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 192-194

राष्ट्रीय एकता के विघटनकारी तत्व एवं उनसे बचाव के उपाय

डॉ0 आलोक कुमार सिंह

अध्यक्ष, राजनीतिशास्त्र विभाग, डी0एन0 पी0जी0 कॉलेज, फतेहगढ, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

भारतीय समाज की पाचन शक्ति बड़ी विशाल है। अनेक प्रकार की विविधताओं के होते हुए भी भारतीय समाज ने उन्हें इस प्रकार आत्मसात किया है कि इसकी सांस्कृतिक एकता पर किसी भी प्रकार की ऑच नहीं आने पाई है। शायद इसका यही कारण रहा हो कि आर्य लोग, जिनका इसके निर्माण में सबसे अधिक योगदान है, जब उसका निर्माण करने लगे तो उनके सामने उस समय भारत में रहने वाली अनेक प्रजातयों और सम्प्रदायों को समन्वित करने का सवाल था। इसीलिए उन्होंने इसको बड़ा लचीला रूप दिया जिससे यह एकत्व सदैव के लिए सम्भव हो सका है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने कहा है कि भारत की यह विशेषता रही है कि यह अनेक जातियों को घोटकर के जाति बना देता है, अनेक धर्मों को मिलाकर एक धर्म तैयार कर देता है और अनेक संस्कृतियों का मिश्रण कर एक नई सस्कृति पैदा कर देता है। राष्ट्रीय एकता से तात्पर्य किसी राष्ट्र के सभी व्यक्तियों में हम की भावना का होना है। जब किसी राष्ट्र के सभी व्यक्ति किसी भी आधार पर भावनात्मक एकता का अनुभव करते हैं एवं राष्ट्रहित के अपने व्यक्तिगत एवं सामूहिक हितों का त्याग करते हैं तो यह कहा जाता है कि उस राष्ट्र में राष्ट्रीय एकता है।

राष्ट्रीय एकता किसी भी राष्ट्र का मुख्य तत्व होता है। बिना इसके राष्ट्र की कल्पना ही नहीं की जा सकती। राष्ट्रीय एकता के अभाव में कोई भी राष्ट्र बहुत दिनांक तक जीवित नहीं रह सकता। राष्ट्रीय एकता के लिए भावनात्मक एकता आवश्यक है।

आज भारत के समक्ष राष्ट्रीय एकता के लिए अनेक खतरे नजर आ रहे हैं। देश के तथाकथित कर्णधारों द्वारा राष्ट्रहित को ताक पर रखकर राजनीति की जा रही है। जाति एवं धर्म के नाम पर साम्प्रदायिकता एवं हिंसा को पल्लवित किया जा रहा है। स्वतन्त्रता के बाद से ही देश में भावनात्मक एवं राष्ट्रीय एकता में खतरे महसूस किए जाने लगे थे। यही कारण है कि सन् 1961 में ही डॉ0 सम्पूर्णानन्द की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया। इस समिति ने जातिवाद, साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीयता, प्रान्तीयता, भाषावाद, निराशा एवं आदर्शों का अभाव आदि तथ्यों को राष्ट्रीय एकता के लिए खतरनाक माना।

अपने देश में अनेक जातियाँ निवास करती हैं जो एक दूसरे से अपने को श्रेष्ठ मानती हैं एवं आपस में द्वेष एवं ईष्या रखती हैं, जो राष्ट्रीय एकता में बाधक हैं। जाति के साथ अपने देश में अनेक सम्प्रदाय के भी लोग रहते हैं, जिनमें आधारभूत भिन्नता है। फलस्वरूप राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा उत्पन्न होता है। ग्रेंनबिल आस्टिन लिखते हैं 'स्थानीय और राज्य स्तर की राजनीति में जातीय संघ और समुदाय निर्णय प्रक्रिया को प्रभावित करने में उसी प्रकार की भूमिका अदा करते है जिस प्रकार पश्चिमी देश में दबाव गुट''। जाति व्यवस्था परम्परागत शक्ति के रूप में कार्य करती है तथा राजनीतिक विकास एवं आधुनिकीकरण के मार्ग में बाधक है। लेकिन वस्तुतः ये मान्यताएं सही नहीं हैं। इस सम्बन्ध में रजनी कोठारी का अभिमत है कि –प्रथम, कोइ भी सामाजिक तत्व कभी भी पूर्णतया समाप्त नहीं हो सकता, अतः यह प्रश्न करना कि क्या भारत में जाति का लोप हो रहा है, अर्थ–शून्य है।'' द्वितीय, जाति व्यवस्था आधुनिकीकरण और सामाजिक परिवर्तन में रूकावट नहीं डालती वल्कि उसको बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।'' किन्तु वर्तमान में जाति का राजनीतिक भावार्थ राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा है।

क्षेत्रीयतावाद से तात्पर्य एक देश में या देश के किसी भाग में उस छोटे से क्षेत्र से है जो आर्थिक, भौगोलिक, सामाजिक आदि कारणों से अपने पृथक अस्तित्व के लिए जागरूक है। डॉ0 श्रीराम माहेश्वरी के अनुसार, इस दृष्टि से 'क्षेत्र' एक तरह से समाजशास्त्रीय अवधारणा है जिसे विधि सामाजिक हितों की अभिव्यक्ति की धुरी कहा जा सकता है।' अपने देश में क्षेत्रीयता एवं प्रान्तीयता राष्ट्रीय एकता में बाधक है। अपने देश में एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र तथा एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त की भाषा, सभ्यता एवं संस्कृति में अन्तर मिलता है। जिससे लोग स्वयं को एक दूसरे से भिन्न समझते हैं और संकीर्ण मानसिकता के चलते राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा उत्पन्न करते हैं। भाषावाद इसमें अहम् भूमिका निभाती है, भिन्न–भिन्न भाषावादी एक दूसरे से अपने को भिन्न समझते हैं। भाषा के आधार पर प्रान्तों का गठन राष्ट्रीय एकता में बाधक सिद्ध हुआ है।

युवकों में बढ़ती निराशा एवं कुंठा भी राष्ट्रीय एकता के लिए एक गम्भीर चुनौती बनती जा रही है। बढ़ती बेरोजगारी के चलते उन्हें अपना भविष्य अंधकारमय दिखाई दे रहा है जिससे ये विघटनकारी तत्वों से प्रभावित होकर विद्रोही हो जाते है एवं राष्ट्रीय एकता के लिए खतरे पैदा करते हैं। विभिन्न प्रकार की अलगाववादी एवं नक्सलवादी तत्व हिंसक घटनाएं करके राष्ट्र की एकता में अनवरत बाधाएं उत्पन्न कर रहे हैं।

भारत एक विविध संस्कृतियों को अपने में समाहित करने वाला देश है। यहॉ की सस्कृति में विविधता में एकता है। वसुधैव कुटुम्बकम हमारा राष्ट्र ध्येय है। हमारा देश जाति, धर्म, क्षेत्र, प्रान्त एवं भाषा में आज से ही नहीं, अपितु प्राचीन काल से विभिन्नता ग्रहण किए हुए हैं। फिर भी हमारी एकता कायम रही है और इसीलिए कहा जाता है कि भारत विभिन्नता में एकता का देश है। किन्तु अंग्रेजों के आने के बाद से यह एकता विखण्डित होने लगी और स्वतंत्रता पश्चात तो इसमें संकीर्णता आने लगी और राष्ट्रीय एकता के लिए खतरे बढ़ने लगे। वर्तमान समय में राष्ट्रीय एकता के लिए सबसे बड़ा खतरा हमारी संवैधानिक त्रुटियाँ वोट की राजनति, जनसंख्या वृद्धि एवं बेरोजगारी, आर्थिक विषमता, आतंकवाद/साम्प्रदायिकता, असमान विकास तथा अन्य राष्ट्रों द्वारा हस्तक्षेप है। इन समस्याओं के कारण हमारी राष्ट्रीय एकता खतरे में दिखाई दे रही है।

भारत एक लोकतान्त्रिक देश है। यहॉ प्रत्येक नागरिक को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकार समान रूप से मिले हैं। लोकतंत्र जनता का शासन होता है। इसमे वोट का बड़ा महत्व है। वोट की राजनीति राष्ट्रीय एकता के लिए बड़ी बाधक है। वोट की राजनीति देश में विघटनकारी तत्वों को बढ़ावा दे रही है। भाषा, धर्म, जाति, लिंग, विकास आदि के नाम पर राजनीतिक पार्टियों विभन्न प्रकोष्ठों का गठन किए हैं। यद्यपि कि राजनीतिक पार्टियों के अनुसार इन प्रकोष्ठों का गठन विशेष वर्ग के उत्थान के लिए

किया गया है, किन्तु वास्तविकता यह है कि ये वोट के लिए हैं। यह वोट की राजनीति सामाजिक एव राजनीतिक ताने–बाने को छिन्न–भिन्न कर रही है।

भारत में स्वतन्त्रता के बाद से ही जनसंख्या दर में गुणोत्तर अनुपात में वृद्धि हो रही है। फलस्वरूप जनसंख्या एवं क्षेत्रफल का अनुपात असन्तुलित होता नजर आ हा है। जनसंख्या वृद्धि राष्ट्रीय एकता में कम बाधक नहीं है जनसंख्या वृद्धि के चलते विभिन्न अपराधिक समस्याएं बढ़ रही है। बेरोजगारी बढ़ रही है और एक दूसरे के प्रति असंतोष बढ़ रहा है जो राष्ट्रीय एकता के लिए खतरनाक साबित हो रहा है। इसी प्रकार से जनसंख्या वृद्धि आतंकवाद, नक्सलवाद, अलगाववाद जैसी घटनाओं को जन्म दे रहा है जो देश के लिए खतरा है।

भारत एक उदारवादी एवं लोककल्याणकारी राज्य है। यहॉ मुक्त अर्थव्यवस्था को अपनाया गया है। किन्तु आर्थिक असमानता अमीर एवं गरीब वर्ग के बीच अधिक होने के कारण अमीर एवं गरीब के बीच की खाई चौड़ी होती जा रही है। आर्थिक विषमता भी राष्ट्रीय एकता के लिए बाधक है। अमीर–गरीब की खाई बड़ी गहरी है। अमीर–गरीब का शोषण कर रहा है जिससे गरीब वर्ग अमीर वर्ग से घृणा करता है और असंतोष की भावना पनपती है जो राष्ट्रीय एकता के लिए बाधक होता है।

स्वतंत्रता के बाद से ही भारत के विभाजन होने के पश्चात आतंकवाद हमारे देश के लिए सबसे बड़ा खतरा बन गया है। चूँकि देश का विभाजन ही सम्प्रदाय के नाम पर हुआ है। अतः सम्प्रदाय के नाम पर आतंकवाद पुष्पित पल्लवित हो रहा है। देश में बढ़ता आतंकवाद एवं साम्प्रदायिकता भी राष्ट्रीय एकता के लिए सबसे प्रमुख बाधक तत्व है। विभिन्न सम्प्रदाय अपने स्वार्थों की पूति हेतु साम्प्रदायिक दंगे फैलाते हैं। अपने देश में कई भयंकर साम्प्रदायिक दंगे हो चुके हैं जिसमें अपार धन–जन की क्षति हुई है। इसी तरह विरोधी पड़ोसी देश प्रायोजित आतंकवाद को बढ़ावा देते हैं।

देश में विकास जन्य असमानता भी राष्ट्रीय एकता में बाधक है। असमान विकास के चलते असंतोष फैल रहा है जैसे– असम, झारखण्ड, कश्मीर एवं पूर्वोत्तर भारत में इस तरह के असंतोष फैल रहे हैं। बाहरी राष्ट्रों द्वारा देश के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप भी राष्ट्रीय एकता में बाधक सिद्ध होता है। भाषा, जाति, सम्प्रदाय के नाम पर बॉटने की कोशिश की जाती है। देश में जो साम्प्रदायिक हिंसा फैलती है उसमें आन्तरिक कारण जो भी रहा हो, विदेशी हस्तक्षेप भी कम नहीं है। साम्प्रदायिकता के दुष्परिणामों के सम्बन्ध में डॉ0 रामधारी सिंह दिनकर लिखते हैं–'साम्प्रदायिकता एक रोग है और वह भी संक्रामक।'

आज की भारतीय राजनीति आज मूलभूत समस्याओं से ध्यान हटाकर भावनात्मक मुद्दों से सस्ती लोकप्रियता एवं जनाधार बढ़ाने का दंश झेल रही है। इस बार के छलावे एवं उपेक्षा से उपजे अविश्वास तथा वोट बैंक प्रेरित धर्म निरपेक्षता ने आम लोगों को क्षुब्ध किया है। आज के नेता उत्तरदायित्व न निभाने एवं देश की समस्याओं के लिए दोष दूसरों पर मढ़ने की प्रवृत्ति के चलते आत्म चिन्तन से परहेज करते हैं। वहीं दूसरी तरफ लोगों की धर्मभीरूता का लाभ उठाकर धार्मिक संगठन अपना महत्व बनाए रखने एवं लाभान्वित बने रहने की गरज से ऐसे हथकंडे अपना रहे हैं। जिससे देश साम्प्रदायिकता की आग में जलने लगता है आज के सभी नेता धर्म निरपेक्षता की बात करते हैं किन्तु जब भी अवसर मिलता है धार्मिकता की संकीर्णता को प्रदर्शित करने से नहीं चूकते। राष्ट्रीय एकता के विकास के लिए सबसे आवश्यक यह है कि राष्ट्रीय एकता के जो बाधक तत्व हैं उनको दूर किया जाए। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे सुझाव हैं जिनको लागू कर राष्ट्रीय एकता का विकास किया जा सकता है। जैसे शिक्षा एवं अन्य क्षेत्रों में राष्ट्रीय दृष्टिकोण को बढ़ावा देना, आर्थिक क्षेत्रों में अल्पसंख्यकों के लिए अवसर में वृद्धि करना, व्यक्ति एवं सम्पत्ति की सुरक्षा का प्रतिपादन करना, संविधान में सुधार करना, राष्ट्रीय कानून के सर्व व्यापक बनाना, वोटों की वर्गभेद, आधारित राजनीति का अन्त करना, आर्थिक विषमता का अन्त करना, राष्ट्रीय महत्व की वस्तुओं एवं क्रियाओं को प्राथमिकता, आदर्शों की प्रतिष्ठा स्थापित करना एवं उचित शिक्षा व्यवस्था मुख्य है।

शिक्षा एवं अन्य क्षेत्रों में राष्ट्रीय दृष्टिकोण को बढ़ावा देकर राष्ट्रीय एकता का विकास किया जा सकता है। शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्रीय एकता का विकास करना होना चाहिए। राष्ट्रीय एकता के प्रचार एवं विघटनकारी तत्वों के अन्त हेतु मीडिया का प्रयोग कर जातीय एवं साम्प्रदायिक तत्वों का अन्त किया जा सकता है।

राष्ट्रीय एकता में विकास हेतु संविधान में भी कुछ सुधार करना आवश्यक है। संविधान की भाषा में पिछड़े अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक जैसे–वर्ग–भेद बढ़ाने वाले शब्द नहीं होने चाहिए। देश में सभी व्यक्तियों को समान सुविधाएं, अवसर एवं समान अधिकार दिए जाए। जाति, धर्म, भाषा, संस्कृति आदि किसी भी आधार पर कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। देश की सम्पूर्ण जनता के लिए समान कानून होना चाहिए। कानून में किसी भेदभाव का समावेश नहीं होना चाहिए।

जाति, धर्म, क्षेत्र भाषा आदि के आधार पर राजनैतिक दलों के गठन पर रोक लगनी चाहिए और इन आधारों पर वोट प्राप्त करने के तरीकों को गैर कानूनी करार दिया जाना चाहिए। चुनाव सिद्धान्तों एवं नीतियों पर होना चाहिए। क्षेत्र, जाति, धर्म एवं संस्कृति के आधार पर नहीं।

राष्ट्रीय एकता के विकास के लिए यह भी आवश्यक है कि आर्थिक विषमता का अन्त कर न्यायोचित सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था बनाई जाए एवं रोजगार की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए राष्ट्रीय महत्व की वस्तुओं एवं क्रियाओं को प्राथमिकता देनी चाहिए एवं उनका सम्मान करना चाहिए ताकि सबके मन में अनिवार्यतः राष्ट्रीय भावना बलवती हो।

राष्ट्रीय एकता के विकास के लिए अपने खोए हुए आदर्शों की पुनर्प्रतिष्ठा करना नितान्त आवश्यक है। हमारे तीन शाश्वत आदर्श मूल्य हैं–सत्य, शिवम् एवं सुन्दरम् इसी तरह सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य में पॉच आदर्श हमारी पहचान है। इसी तरह स्वतन्त्रता, समानता, भ्रातृत्व, न्याय, समाजवाद एवं धर्म निरपेक्षता हमारे लोकतन्त्र के सिद्धान्त हैं। जिनकी प्रतिष्ठा होनी चाहिए। इसके साथ ही साथ उचित शिक्षा व्यवस्था लागू कर भावी पीढ़ी में भावात्मक एवं राष्ट्रीय एकता का विकास करना होगा।

इन सबके बावजूद सबसे मुल बात यह है कि हम अपने अहम् को छोड़ें हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई या सिख सम्प्रदाय से जुड़ें। नेता एवं बृद्धिजीवी अपने अहम् को दरकिनार कर राष्ट्रहित में एवं राष्ट्रीय एकता के बारे में सोचें और उनका सर्वमान्य तथा न्यायोचित हल निकालें अन्यथा राजनैतिक दल एवं साम्प्रदायिक ताकते जब–तब महसूस व बेगुनाह जनता की लाश पर स्वार्थ की रोटियॉ सेकती रहेंगी।

वस्तुतः राष्ट्र की एकता को सुरक्षित रखने के लिए आपसी भाई चारे एवं सौहार्द की भावना का विकास करना होगा। धर्म, जाति, लिंग, भाषा, क्षेत्र जैसे स्थानीय मुद्दों में भेद–भाव को मिटाकर सामाजिक समरसता बढ़ाना होगा। राजनीतिक सवर्ग को यह सोचना होगा कि हम सत्ता के स्वार्थ में जनता को गुमराह न करे और यदि कोई ऐसा करता हुआ पाया जाये तो उसे न केवल चुनाव लड़ने से रोका जाये वल्कि कठोर से कठोर सजा दी जाये।

मतदान के बाद जनता अपने कर्तब्य की इतिश्री कर लेती है और उसे आगामी चुनाव का इन्तजार होता है। ऐसे में राजनीतिक नेतृत्व की भूमिका बहुत बढ़ जाती है। हमें यह भी जानना चाहिए कि यदि हिंसा, प्रेम एवं शान्ति का विनाश करती है तो हिंसा एवं आतंक को

मान, प्रेम एवं भाई चारे से ही खत्म किया जा सकता है। ताकि खुशहाल एवं स्वस्थ भारत का निर्माण हो सके और हम भारतवासी होने पर गर्व कर सकें।

सन्दर्भ

1. डॉ0 आर0सी0, त्रिवेदी एवं डॉ0 एम0पी0राय–भारतीय सरकार एवं राजनीति, कॉलेज बुक डिपो, नई दिल्ली 1997
2. कौशिक, सुशीला–भारतीय शासन और राजनीति, हि0मा0कि0मि0, नई दिल्ली 1994
3. कोठारी, रजनी–पोलिटिक्स इन इण्डिया, 1972
4. कोठारी, रजनी–कास्ट इन इण्डियन पोलिटिक्स, 1970
5. दीक्षित प्रभा–साम्प्रदायिकता का ऐतिहासिक संदर्भ, मैकमिलन, 1980
6. जोन्स मारिस–भारतीय शासन एवं राजनीति
7. खॉ रशीदउद्दीन–द रीजनल डाइमेन्सन, सेमिनार, 1974
8. दिनकर, रामधारी सिंह–संस्कृति के चार अध्याय